

स्तो वृक्षा भानुनामोः 3,21,4. 29,7. AV. 5,1,9. Mit abweichender Betonung कविशस्त्रं CAT. Br. 1,4,2,8.

कवीय (von 1. कवि), कवीयति wie ein Weiser handeln: अग्रे वृषानः पवते कवीयन्त्रं न प्रवर्धय मम RV. 9,94,1. med. auf Weisheit Anspruch machen: कवीयमानः क इह प्रवोचदेवं मनः कुतो अग्निं प्रवोतम् 1,164,18. — Vgl. कव्य.

कवीय n. = कविय ḠAT. Dh. im ÇKDr.

कवीयम् so v. a. कवित् (s. u. 1. कवि 1.) v. l. des SV. zu RV. 9,94,1 (s. u. कवीय).

कवल astrol. = قبال Ind. St. 2,271.273.

कवल n. Lotus ÇABD. im ÇKDr. — Vgl. कवार.

कवोल (1. कव + उल) adj. lauwarm P. 6,3,107. Vor. 6,96. AK. 1,1,2,36. H. 1386. ÇĀKH. Çr. 4,14,15. RAGH. 1,67. — Vgl. कडुल, कोल.

कव्य ved. denom. von 1. कवि P. 7,4,39. कव्यतः सुमनसः Sch.

कव्य 1) adj. subst. = 1. कवि 1. KĀC. zu P. 5,4,30. वीतिं जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवानो नन्द्यैर्भिरिन्द्रः RV. 9,91,2. अग्रे याहि स विद्वैर्भिराहुत्यैः कव्यैः पितृभिर्ममसिद्धिः 10,13,10. कव्यो ऽसि कव्यसूदन इति शामत्रम् ÇĀKH. Çr. 6,12,9. — 2) m. a) eine Art Manen: मातलौ कव्यैर्मो अङ्गिरेभिः RV. 10,14,3. VP. 239, N. 3. — b) N. pr. eines der 7 Weisen im 4ten Manvantara HARIV. 426. — 3, n. a) die Eigenschaften —, das Thun eines Weisen (vgl. काव्यता) VS. 22,2. — b) das den Weisen Gebührende, das den Manen dargebrachte Opfer AK. 2,7,24. H. 832. पितृव्यगुदैर्दक्षिणान्तर्तुः स्वस्त्रीयमातुलान् । पूष्यैत्कव्यपूर्ताभ्यां वृद्धानधातिथीन्स्त्रियः ॥ BRHSP. in DĀ. 269,3. यस्यास्येन सदाश्रितं कव्यानि त्रिदिवोक्तः । कव्यानि चैव पितरः किं भूतमधिकं ततः ॥ M. 1,95,94. 3,97. 128. 130. 132. 133. 135. 147. 150. 152. 175. 190. 4,31. 5,16. SUND. 2,10. MBH. 3,9763. 11468. 13426. 13,464. 488. 1533. 2531. कव्यानि ज्ञाननिष्ठेभ्यः प्रतिष्ठाप्यानि 4321. Viçv. 3,13. Vid. 247. वत्सेन पितरो ऽयम्णा कव्यं तीरमधुततः BĀG. P. 4,18,18. Fast überall in Verbindung mit कव्य.

कव्यता (von कव्य) f. die Eigenschaften —, das Thun eines Weisen: न पूर्वया निविदा कव्यतापोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम् RV. 1,96,2.

कव्यवाल m. pl. s. u. कव्यवाल्.

कव्यवाल् (क + वाल्) adj. = कव्यवाल्. कव्यवाउनलः Verz. d. B. H. No. 1144. Aus dem nom. hat sich ein neues Thema कव्यवाउ (No. 206.1143) oder कव्यवल (No. 324. 1127. 1133. 1143. 1233. 1238) gebildet. कव्यवालादयः unter den Manen TRIK. 1,1,7.

कव्यवाल् (क + वा) adj. das den Weisen Gebührende (zu denselben) bringend P. 3,2,65. अग्रे कव्यवाल्नाय स्वाहा VS. 2,29. 19,64. fgg. AV. 18,4,71. त्रयो वा अग्रे कव्यवाल्ना देवानो कव्यवाल्नः पितृणां सक्ता अमुराणाम् TS. 2,3,8,6. CAT. Br. 2,6,4,30. GRHJASAM. 1,9. VP. 84, N. 9. Als Bein. Çiva's Çiv. — Das Wort ist dem कव्यवाल् nachgebildet.

कम्, कशति tönen Vor. DHĀTUP. 17,75. Ausserdem erscheint कम् als v. l. von कम्, कम्, कम् und शम्. — चाकशति s. u. काष्.

कश 1) m. a) ein best. kleines Thier VS. 24,26,38. TS. 5,3,23,1. 18,1. Vgl. कशीका. — b) Peitsche: स राजा तं कशेनाताडयत् MBH. 3,13268. Vgl. कशा. — 2) f. कशा a) Peitsche NAGH. 1,11. AK. 2,10,31. H. 1232.

II. Theil.

an. 2,544. रथीव कशयाश्वा अभित्तिपन् RV. 5,83,3. इत्थं प्राव एषां कशा रुस्तेषु यददान् 1,37,3. अमर्त्याः कशया चोदत त्मना 168,4. 162,17. 8,33,11. या वा कशा मधुमत्यश्चिना मृतोवती । तया यत्नं मिमित्तम् 1,22,3. 157,4. AV. 9,1,5,21.22. CAT. Br. 1,4,1,15. त्रिकर्ष adj. (रथ) RV. 2,18,1. यो कश्यते कशया MBH. 3,13272. अथैनं कशया ताडयेत् SUGH. 1,101,8. कशानियातः R. 5,48,6. कर्कशाः कशाः । तव गात्रे पातय्यसि MĀKĀH. 133,24. कशाघातेन ताडितः PANKAT. 238,18. (तम्) कशया प्रहृत्ति BĀG. P. 5,26,15. Auch कषा geschrieben: पृष्ठे कषया ताडितः 3,30,23. R. 6,37,41. कशाह् adj. die Peitsche verdienend AK. 3,1,44. H. 1236. — H. an. hat noch die Bedd.: b) Strick. — c) Mund. — d) Eigenschaft.

कशकृत्स्न (कश + कृ) m. N. pr. eines Mannes gāṇa उपकादि (v. l. für काश) zu P. 2,4,69. gāṇa अरीकणादि (v. l. काश) zu 4,2,80.

कशम् n. Wasser nach NAGH. 1,12. Vgl. कशीन्.

कशावत् (von कशा) adj. mit einer Peitsche versehen: (अवत्ता) स्मर्भीषू कशावता RV. 8,23,24. अरुषी स्वमीशुः कशावती 57,15.

कशिक gāṇa रुत्त्यादि zu P. 5,4,138. पाद ebend.

कशीम् m. n. Matte, Kissen: यथा नृं कशीपुने स्त्रियो भिन्दत्यश्मना AV. 6,138,3. किरामयं कशीपुपस्तुणाति, कशीपुनोः CAT. Br. 13,4,2,1. KĀTJ. Çr. 15,6,4. 20,2,21. पश्चादग्नेर्भेषु कशीपुस्त्यैः KAUÇ. 24. सत्यां नितौ किं कशीपोः प्रयासैः BĀG. P. 2,2,4. कृतेः कशीपुभिः कात्तं पर्यङ्कव्यजनासैः 3,23,16. (शये) कचित्प्रासादपर्यङ्के कशीपो वा 7,13,40. Nach den Lexicogr.: m. Kost und Kleidung AK. 3,4,19,133. H. an. 3,441. MED. p. 18. कसिपु H. 685. ḠAT. Dh. im ÇKDr. — Vgl. किरामयकाशु.

कशीपुपर्वणं (क + उप) n. Kissenüberzug, Decke AV. 9,6,10.

कशीका f. Wiesel (nach SĀJ.): या कशीकिव जङ्गले RV. 1,126,6. — Vgl. कश und कशीका.

कशु m. N. pr. eines Mannes: यथा चिञ्चैयः कशुः शतमुष्ट्राणां दर्दत्सकृत् दश गोनाम् RV. 8,3,37.

कशेरु m. N. pr. eines Jaksha MBH. 2,397.

कशेरु nicht m. AK. 3,6,2,13. n. (कसेरु) SIDDH. K. 248, b, 4 v. u. 1) Rückgrat (कशेरुः) H. an. 3,534. m. n. HALĀJ. im ÇKDr. H. 627. Sch. — 2) N. einer Grasart mit knolliger Wurzel, Scirpus Kysoor Roxb., AK. 3,4,24,157. SUGH. 2,489,20. H. an. (कशेरुः). m. f. (कशेरु) n. Uṇ. 1,88. n. RATNAM. SUGH. 1,377,18. कसेरु 2,223,11. कसेरु m. RĀGĀN. im ÇKDr. — 3) m. N. eines Theils von Ġambudvīpa ÇABD. im ÇKDr. Vgl. कशेरुम्. — 4) f. N. pr. einer Tochter von Tvashṭar: वष्टुर्दक्षितं भैमः कशेरुमगमतदा । गजत्रयेण जयाह् रुचिराङ्गो चतुर्दशोम् ॥ HARIV. 6793. LANGLOIS und TROYER (RĀGĀ-TAR. I. I, p. 422. fg. mit der Var. कशेरु) machen daraus ein Land.

कशेरु 1) = कशेरु 2. SUGH. 1,80,14. 238,8. 372,12. 2,38,8. m. 1. 225,16. n. RĀGĀV. im ÇKDr. f. का RATNAM. im ÇKDr. कसेरुका SUGH. 1,156,21. 2,78,4,21. 128,18. 205,8. 509,7. कसेरुका f. RĀGĀN. im ÇKDr. — 2) f. कशेरुका = कशेरु 1. AK. 2,6,2,20. H. 627 (nach dem Schol. auch n.). कसेरुका RĀGĀN. im ÇKDr.

कशेरुम् und कसेरुम् 1) m. N. pr. eines Javana MBH. 3,491 (कसे). HARIV. 9137. — 2) N. eines Theiles von Bharatavarsha VP. 175 (कसे); vgl. कशेरु 3.